Impact Factor 2.143 ISSN- 2319-8648

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

Current Global Reviewer

Multidiciplinary international research journal

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

18th ,19th January 2019

जनसंचार माध्यम और हिंदी

संपादक
अरुण वी. गोदाम

सहसंपादक
डॉ. ऐनूर एस. शेख
हिंदी विभागाध्यक्षाकला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,
राहाता

कार्यकारी संपादक
प्रा. दादासाहेब एन. डांगे
हिंदी विभाग,
हिंदी विभागाध्यक्षाकला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,
राहाता

www.rjournals.co.in

Impact Factor – 2.143 ISSN – 2319-8648

Current Global Reviewer

Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

18th ,19th January 2019

जनसंचार माध्यम और हिंदी

संपादक
अरुण बी. गोदाम

सहसंपादक
डॉ. ऐनूर एस. शेख
हिंदी विभागाध्यक्षा कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, राहाता

कार्यकारी संपादक
प्रा. दादासाहेब एन. डांगे
हिंदी विभाग
हिंदी विभाग कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, राहाता

Shaury Publications

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 400/-

35	जनसंचार माध्यम और हिंदी – **प्रा. रोहिणी. कासार**	113
36	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिंदी – **डॉ. अंजुमआरा शेख**	115
37	विज्ञापन और हिंदी – **कु. उज्ज्वला अहिरे**	118
38	कमलेश्वर के उपन्यास और सिनेमा – **मिनेश सातपुते**	120
39	रेडियो नाटक और हिंदी – **प्रा. दिपाली दत्तात्रय तांबे**	122
40	विज्ञापन और हिंदी – **श्री. विश्वनाथ चंद्रकांत पटेकर**	126
41	हिंदी सिनेमा और हिंदी – **श्री. विनोद गोविंदराव निरगुडे**	129
42	जनसंचार माध्यम और हिंदी – **डॉ. जालिंदर इंगले, जयश्री गायकवाड**	132
43	दूरदर्शन में हिंदी का प्रयोग एवं हिंदी बालकार्यक्रम की स्थिति – **प्रा. अमोल दहातोंडे**	135
44	सोशल मीडिया और वर्तमान समाज – **आर. अरूणा**	137
45	जनसंचार माध्यम दूरदर्शन और हिंदी– **सौ. विद्या शामराव चौगुले**	141

Current Global Reviewer Peer Reviewed Journal | ISSN- 2319-8648
Impact Factor - (IIJIF) – 2.143, जनसंचार माध्यम और हिंदी | January 2019 | Peer Reviewed Journal

दूरदर्शन में हिन्दी का प्रयोग एवं हिन्दी बालकार्यक्रम की स्थिति

प्रा. अमोल मच्छिंद्र दहातोंडे
शोधकर्ता–हिंदी अनुसंधान केंद्र,हिंदी विभाग न्यू आर्ट्स कॉमर्स अँड सायन्स कॉलेज, अहमदनगर

विज्ञान प्रोद्योगिकी के इस युग मे समाज से जोडने के लिए केवल साहित्य ही माध्यम नही रहा है द्य बदलती जीवनशैली के कारण पाठक वर्ग बहुत कम हो गया है द्यउस पर किसी रचना को पढना अधिक कष्ठदायक है तुलना में देखने के और आज तो हमारे पास जनसंचार माध्यमों की भरमार हो गई है द्य जिस कारण लिखित साहित्य पर विविध कार्यकमों,धारावाहिक एवं फिल्मों का निर्माण हुआ है द्यजिसे पाठक अधिक चाव से देखता है पसंद करता है द्य इस कारण हम कह सकते है की साहित्य और जनसंचार माध्यम का संबंध अटूट है द्य

आज हमारे सामने जनसंचार माध्यम की लिस्ट देखे तो बहुत बडी होती जा रही है द्य जिसमें टि.वी,रेडियो,कंप्युटर,लॅपटॉप इंटरनेट, अँन्ड्राइड मोबाइल,प्रोजेक्टर आदि जिन पर विभिन्न कार्यक्रम की भरमार होती जा रही है द्य विभिन्न सिरियल शो,सवाल–जवाब कार्यक्रम,सायन्स के प्रदर्शन,रियालिटी शो,न्यूज शो इन सभी कार्यक्रमो की स्क्रिप्ट लिखी जाती है जो की साहित्य का ही एक रूप माना जाता है द्य दूरदर्शन (टी.वी) को पूरे विश्व में देखा जाता है द्य हर उम्र का व्यक्ति,औरत,बच्चे,बुढे इसे देखना पसंद करते है द्य भारतीय महिला प्रेक्षक वर्ग को ध्यान में रखकर दूरदर्शन पर पारिवारीक धारावाहिक,खान–पान सबंधी विभिन्न कार्यक्रमों को दिखाया जाता है द्य इसके साथ ही विभिन्न प्रकार के वस्तुओं का विज्ञापनों को भी हिन्दी भाषा में ही दिखाया जाता है जिसका दोनों को फायदा मिलता है द्य

दूरदर्शन के साथ हिन्दी भाषा का संबंध अटूट रहा हैद्य आज के अधिकांश कार्यक्रम हिन्दी भाषा में ही दिखायें जाते है द्य यहाँ तक की खेल–कुद के कार्यक्रम के सूत्र संचालन,कॉमेंन्ट्री भी हिन्दी भाषा में ही की जाती है द्यभारत में आय.पी.एल ,कबड्डी प्रो एवं बॅडमिंटन (बी,पी.एल) भी हिन्दी भाषा में प्रसारित हो रहा है द्य इन कारणो से दर्शक वर्ग की संख्या भी बढी है द्यस्टार प्लस चॅनेल हिन्दी भाषा में खेलों का प्रसारण कर रहा है द्य इसके साथ ही भारतीय प्रेक्षक वर्ग का एक बहुत बडा वर्ग बालकों का आता है द्यइसमें एक वर्ष की आयु से लेकर 20वर्ष की आयु तक के बालको संख्या काफी ज्यादा है द्य कहते है भारत एक नवयुवकों का देश है 135 करोड की जनसंख्या में कम से कम 30करोड तक तो इसी वर्ग के आते है इन्ही बच्चों एवं नवयुवकों पर नव भारत का भविष्य आधारित है द्य भारतीय बच्चों का दिमाग बहुत ही तेज एवं क्रियाशिल माना जाता है शायद इसी कारण भारत के भविष्य एवं प्रगती में बाधक होनेवाली विभिन्न समस्याओं को विदेशी चॅनेल और कुछ पैसों की लालच में देशी चॅनेल बच्चों कों गलत,भौंडी तरह की चीजे दिखाने का प्रयास कर रहे हैं। इसका उदाहरण ब्लू व्हेल गेम है, जो बच्चों कों आत्महत्या करने पर मजबूर कर देता था। द्यकार्टून चॅनेल और अन्य बालकार्यक्रम चॅनेल के माध्यम से कार्टून एवं बाल धारावाहिकों को दिखाकर बच्चों कों पथ से विचलित करके जादुई,फंतासी ,काल्पनिक विश्व में जीवन जीने को बाध्य किया जा रहा है द्य उदाहरण स्वरूप ओगी और कॉकरोच कार्टून,निंज्जा हतोरी,बालविर आदि इसी प्रकार के अनेक धारावाहिकों का नाम लिया जा सकता है द्य जिसे देखकर बच्चे काल्पनिक दुनिया में रहने लगते है द्य उनके बोलने का तरिका, क्रियाकलाप ये उसी प्रकार की होने लगते जैसे कार्टून एवं धारावाहिकों के

पात्रों की होती है द्य ऐसी स्थिती में भारत के महान विद्वान एवं वैज्ञानिक डॉ ए.पी.जे अब्दुल कलाम द्वारा देखा गया सपना की 2020 में भारत महासत्ता बनेगा कैसे पूरा हो सकता है ? जब की उस देश के बच्चें काल्पनिक जीवन व्यतित कर रहे हो द्यायह एक प्रकार का जाल है जिसमें देश का भविष्य फंस रहा है द्यअब ऐसी स्थिती में हम बच्चों को कार्यक्रम देखने से मना नही कर सकते क्योंकी अब उनको आदत लग चूकी हैद्य तब एक ही विकल्प हमारे सामने आता है द्य कि भारतीय भाषाओं,भारतीय संस्कृती एवं पात्रो को लेकर बनाये गए कार्यक्रमों कों देखना और तभी बच्चे भारतीय संस्कृती एवं वर्तमान परिस्थिती के जीवन को महसूस कर सकते है द्य ऐसा नही है कि भारतीय मिडिया द्वारा बनाये गये कार्यक्रमों को बच्चे देखना पसंद नही करते इन कार्यक्रमों कि रचना भारतीय साहित्यकार ही करते है द्यअतरू भारतीय साहित्यकार पूरी तरह से सक्षम है ऐसे कार्यक्रम और साहित्य लिखने में केवल आवश्यकता है उन्हें अवसर प्राप्त होने का द्यऐसे ही एक साहित्यकार का नाम है मालती जोशी जिन्होंने इस क्षेत्र में काम किया हैद्य

मालती जोशी भारतीय हिंदी बालसाहित्य के लेखन का कार्य करनेवाले नामों में से प्रमुख नाम माना जाता है द्य जिनके साहित्य का प्रसारण दूरदर्शन पर हुआ है द्यमध्यमवर्गीय परिवार के विषयों कों लेकर विभिन्न कहानीयों का सृजन उनके द्वारा किया गया हैद्य उनकी कई कहानीयों पर टि.वी धारावाहिकों का निर्माण हो चूका है द्य जैसे—जया बच्चन जी ने 'सात फेरे ' नामक धारावाहिक का निर्माण किया है द्य साथ ही गुलजार द्वारा निर्देशित 'किरदार ' धारावाहिक का भी सृजन हुआ है साथ ही 'भावना' धारावाहिक में भी उनकी कुछ कहानीयों का समावेश हुआ है द्य बच्चों पर आधारित उनकी बहुत सारी कहानीयों में से दो कहानीयों का समावेश "मेहमान की वापसी और नैहर छूटा जाये " महाराष्ट्र शिक्षा बोर्ड के नौंवी एवं बारहवी कक्षा के पाठ्यक्रम में समावेश हुआ है द्यइसके अतिरिक्त उनकी अनेक कहानीयाँ जैसे सफेद जहर,सच्चा सिंगार,पराजय,सी.आय.डी नं—00]आदि कई प्रकार की बालोंपयोगी कहानीयों पर बाल धारावाहिकों का निर्माण किया जा सकता है द्य जो आज के वर्तमान जीवन के पात्रों,घटनाओं और वर्तमान स्थिती को ध्यान में रखकर लिखी गई है द्य जो हमारे देश के भविष्य के लिये विदेशी साहित्य और कार्यक्रमों की तुलना में अधिक लाभदायक सिद्ध होगी।